

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 6

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

एफ. 1. सुलैमान: एक दोष के साथ शांति - भगवान की भूमि को देना

तो "एफ" के अंतर्गत "1" था "एक दोष के साथ शांति, 1 राजा 9:10-25।" आपको याद होगा कि हमने वहां 1 राजा 9:10-25 में जो चर्चा की थी वह उन बीस शहरों को हीराम को देने में सुलैमान का कार्य है। सवाल यह उठता है कि, जिस पर हमने पिछले कक्षा घंटे में चर्चा की थी, क्या उसे वास्तव में वादा किए गए देश का हिस्सा लेने का कोई अधिकार है जो आशेर जनजाति का था, आप तकनीकी अर्थ में कह सकते हैं, लेकिन जो अंततः नहीं हुआ या तो सुलैमान के हों या आशेर के, परन्तु जो यहोवा के थे। यह प्रभु की भूमि थी। क्या उसे उस भूमि को लेने और ऋण के लिए संपार्श्विक के रूप में एक विधर्मी राजा को देने का कोई अधिकार था? मूलतः उसने यही किया। जब हम सिनाई वाचा पर वापस जाते हैं, तो यह बार-बार इस बात पर जोर देता है कि भूमि प्रभु की है। इस्राएली वहाँ रहते थे और वहाँ काम करते थे, परन्तु वे उस भूमि के साथ जो चाहें कर सकते थे। वास्तव में, चिंता यह थी कि ज़मीन को परिवार के बाहर भी न बेचा जाए ताकि जो परिवार वंश एक जनजाति के भीतर था वह अपनी विरासत को बरकरार रख सके। यह इज़राइल, या सोलोमन, या अंततः कोई भी नहीं है जिसके पास शब्द के अंतिम अर्थ में भूमि का स्वामित्व है; यह प्रभु की भूमि थी। मुझे लगता है कि उस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो, सुलैमान कुछ ऐसा करता है जो वास्तव में सच्चे वाचा राजा के लिए उचित नहीं है - उस भूमि में से कुछ को एक विधर्मी राजा को दे देना। तो मुझे लगता है कि उस कृत्य में भी आपको यह संकेत मिलता है कि शांति का यह राज्य त्रुटिपूर्ण है। यह पूर्ण नहीं है। यह वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए। यह केवल अस्थायी है।

यह शांति के राज्य की अंतिम अनुभूति नहीं है; और जब तक शांति का परम साम्राज्य - जिसके बारे में मुझे लगता है कि धर्मग्रंथ हमें बताता है कि एक दिन आएगा और स्थापित हो जाएगा - लेकिन जब तक वह यहां नहीं है, तब तक लोगों का जबरन स्थानांतरण, लोगों को बेदखल करना जारी रहेगा, लोगों को अपने निवास स्थान, इस प्रकार की चीज़ें छोड़ने के लिए मजबूर किया गया और इतिहास इससे भरा पड़ा है। इस समय इस्राएल में नगरों को एक अन्यजाति शासक को सौंपा

जा रहा था। हाल के इज़राइली इतिहास में भी आपके पास ऐसा है, लेकिन मैं उसमें नहीं पड़ूंगा। भी।

चर्च और संशयवाद से मोहभंग से बचना

आप वहां शामिल "शांति सिद्धांत" को ले सकते हैं और इसे वर्तमान समय में चर्च पर लागू कर सकते हैं जहां भगवान के लोग भौगोलिक क्षेत्रीय अधिकारों या उस प्रकार की किसी भी चीज़ के साथ एक राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित नहीं हैं। मुझे लगता है कि आपके पास एक अर्थ में एक ही सिद्धांत है कि चर्च में, यहां तक कि मसीह के चर्च में भी जहां एक निश्चित अर्थ में मसीह की शांति मौजूद है, और जहां यह विश्वासियों के दिलों में निश्चित रूप से शासन और शासन करता है, और जहां इसे होना चाहिए शासन करो और शासन करो विश्वासियों के बीच संबंधों में आप यह भी पाते हैं कि खामियां और दरारें हैं। यह पूर्ण नहीं है। कुछ लोगों के लिए यह इतनी बड़ी बाधा बन जाती है कि उनका चर्च से मोहभंग हो जाता है, और कुछ लोग तो यहाँ तक चले जाते हैं कि वे चर्च से कोई लेना-देना ही नहीं चाहते क्योंकि यह सही नहीं है। मुझे लगता है कि आपको जो समझना है वह यह है कि जब तक पाप अभी भी मौजूद है, चाहे आप पुराने नियम के काल में हों या नए नियम के काल में हों, आपके पास अपनी पूर्णता और पूर्णता में पूर्ण राज्य और शांति नहीं है . यह अभी तक नहीं आया है और अपनी संपूर्णता में यहां नहीं है।

इसलिए मुझे लगता है कि उस तरह की चीज़ के परिप्रेक्ष्य में एक संतुलन की आवश्यकता है। मेरा मानना है कि आपको आदर्शवादी अपेक्षाओं से सावधान रहना होगा। दूसरे शब्दों में, हम कामना और आशा कर सकते हैं कि इस जीवन में और इस समय में सब कुछ उत्तम हो, और जो लोग सुलैमान के समय में रहते थे वे कामना करते थे कि राज्य उत्तम हो, लेकिन यह उत्तम नहीं होगा। हमें इसके उत्तम होने की आशा करने के लिए आदर्शवादी अपेक्षाएँ रखनी चाहिए--यह सिक्के का एक पहलू है। इसका दूसरा पक्ष यह है कि हमें इतना निंदक नहीं बनना चाहिए कि चर्च या समाज में जो बुरी चीज़ें हम देखते हैं उन्हें ऐसी चीज़ों के रूप में स्वीकार कर लिया जाए जिनके बारे में हम कुछ नहीं कर सकते। आप चीज़ों को सिर्फ इसलिए नजरअंदाज कर देते हैं क्योंकि आपको एहसास होता है कि चीज़ें सही नहीं हैं और इसलिए, जब आप समस्याएं देखते हैं, जब आप

ऐसी चीजें देखते हैं जो सही नहीं हैं, तो आप बस इसे सहन कर लेते हैं।

आप चीजों के बारे में निंदक नहीं बनना चाहते। मुझे लगता है कि बाद वाली स्थिति मसीह और उसकी आत्मा की शक्ति से बहुत कम की अपेक्षा करती है। आप समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, सुधार के लिए काम कर सकते हैं और स्थितियों में पर्याप्त सुधार हो सकता है। यह कभी भी पूर्ण नहीं होगा, लेकिन इसका एक उपाय हो सकता है। आदर्शवादी चीज़ जो हमेशा पूर्णता की तलाश करती है वह मनुष्य के गिरे हुए स्वभाव का पर्याप्त ध्यान नहीं रखती है। मुझे लगता है कि आपको उन दोनों चीजों को संतुलन और परिप्रेक्ष्य में रखना होगा। और एक ईसाई को आशा और उम्मीदें होनी चाहिए कि पाप के बावजूद, मसीह दुनिया में काम कर रहा है और चीजें अच्छे के लिए पूरी की जा सकती हैं, और हमें इसे पूरा करने के लिए तेजी से काम करना चाहिए। जब परिणाम पूर्ण और अंतिम न हों तो किसी को पूरी तरह से निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि वे तब तक नहीं होंगे जब तक मसीह स्वयं नहीं आते और शांति के उस पूर्ण राज्य की स्थापना नहीं करते जो सुलैमान ने नहीं किया और जो किसी और ने नहीं किया है।

अब हम इस खंड में हैं जो श्लोक दस से पच्चीस तक चलता है, और हम एक दोष के साथ शांति की बात कर रहे हैं। श्लोक 15 और 16 हमें लगभग एक विपरीत स्थिति प्रदान करते हैं। आप वहां पढ़ते हैं, हम अध्याय 9 में हैं, "यहां राजा सुलैमान द्वारा प्रभु के मंदिर, अपने महल, सहायक छतों, यरूशलेम, हासोर, मगिदो और गेजेर की दीवारों के निर्माण के लिए लगाए गए जबरन श्रम का विवरण है।"

गीजर और कनानी पॉकेट जो बचे रहे और फिर आपको गीजर का उल्लेख होने के बाद पद 16 में एक कोष्ठक में बयान मिलता है, जहां यह बताया गया है कि गीजर क्या है। मिस्र के फ़िरौन राजा ने गेजेर पर आक्रमण करके उस पर कब्ज़ा कर लिया था। उसने ही इसमें आग लगाई थी। उसने इसके कनानी निवासियों को मार डाला और फिर इसे अपनी बेटी, सुलैमान की पत्नी, को शादी के उपहार के रूप में दे दिया। सुलैमान ने गेजेर को फिर बसाया, और उसको दृढ़ किया।

मुझे लगता है कि अध्याय 3 में मैंने गेजेर के बारे में कुछ बताया था। मेरा मानना है कि यह 3:1 है जहां यह कहता है कि सुलैमान ने मिस्र के राजा फ़िरौन के साथ गठबंधन किया और उसकी

बेटी से शादी की। मुझे लगता है कि मैंने उस समय एक टिप्पणी की थी कि उस विवाह गठबंधन के साथ सुलैमान को यह शहर गेजेर प्राप्त हुआ था। लेकिन आप देखिए, आपके यहां स्थिति उलटी है। पिछली आयतों में सुलैमान ने बीस नगर दे दिए; यहां उसे एक शहर मिलता है। उसने एक अन्यजाति शासक को बीस शहर दे दिए, अब उसे मिस्र के फिरौन से गेजेर नाम का एक शहर मिलता है। गेजेर भी एक शहर है जो वादा किए गए देश के क्षेत्र से संबंधित था जो एप्रैम जनजाति से संबंधित था।

विजय के दौरान, आपने यहोशू 10:33 में पढ़ा कि गेजेर हार गया था। यहोशू 10:33 कहता है: "इस बीच, गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने के लिये आया, परन्तु यहोशू ने उसे और उसकी सेना को यहां तक हरा दिया कि कोई भी जीवित न बचा।" इसलिए गेजेर पराजित हो गया था, लेकिन जाहिर तौर पर शहर नष्ट नहीं हुआ था और इस्राएलियों द्वारा बसाया या कब्जा नहीं किया गया था। जाहिर तौर पर विजय के समय से लेकर सुलैमान के समय तक चीजें ऐसी ही रहीं; शहर एक कनानी शहर बना रहा।

अब, आप वर्तमान घटनाओं के कारण यह सोच सकते हैं: कि इज़राइल में तथाकथित फ़िलिस्तीनी समस्या एक आधुनिक समस्या है, हाल की चीज़ है। लेकिन मुझे लगता है कि बाइबिल के पाठ को देखने पर आप कह सकते हैं कि इज़राइल के पास लगभग हमेशा किसी न किसी रूप में फ़िलिस्तीनी समस्या रही है। यह पुराने नियम के काल में भी अस्तित्व में था क्योंकि, जैसे आज अरब और फिलिस्तीनी यरूशलेम और इज़राइल के अन्य हिस्सों, विशेष रूप से वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में रहते हैं, वैसे ही सुलैमान के दिनों में यरूशलेम में एमोरियों, हितियों के साथ-साथ यबूसी भी थे। भूमि के विभिन्न भागों में पेरिज़ाइट्स और हिक्वाइट्स। गैर-इस्राएली इस्राएल की भूमि में निवास कर रहे थे और ऐसे शहर और क्षेत्र थे जहाँ शायद ही कोई इस्राएली रहता था। उन पर इन अन्य लोगों का कब्ज़ा था, और गेजेर ऐसा ही एक शहर था। विजय के समय से लेकर सोलोमन के समय तक, इज़राइल के अधिकांश भाग पर कनानी निवासियों का कब्ज़ा था। तो मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि उस समय भी फ़िलिस्तीनी समस्या थी। निःसंदेह वह स्थिति भी केवल एक राजनीतिक मुद्दा नहीं थी, बल्कि उसके राजनीतिक निहितार्थ भी थे।

लेकिन इसके मूल में, और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि, मुझे लगता है कि

इसमें एक धार्मिक मुद्दा शामिल था क्योंकि पुराना नियम हमें बताता है कि जो कनानवासी भूमि में रह गए थे, वे इसराइल के लिए एक बड़ी बाधा बन जाएंगे ताकि उन्हें अपनी बुतपरस्त पूजा के बाद भटका दिया जा सके और बुतपरस्त प्रथाएँ. ऐसा प्रतीत होता है कि इन लोगों की मूर्तियों में इस्राएलियों के प्रति गहरा आकर्षण था, और न्यायाधीशों के काल में आपने बार-बार पढ़ा कि इस्राएल इन कनानियों की धार्मिक प्रथाओं के कारण भटक गया था। अब तक राजनीतिक खतरे से भी बड़ा खतरा धार्मिक खतरा था।

मुझे लगता है कि सोलोमन के समय में जहां तक गेजेर का संबंध था, राजनीतिक मुद्दा उतना गंभीर नहीं था, लेकिन धार्मिक पहलू न केवल गेजेर के साथ, बल्कि भूमि में बसे कनानी निवासियों के अन्य हिस्सों के लिए भी खतरा बना रहा।

अब, इसे हल करने का एकमात्र तरीका वास्तव में वही करना था जो प्रभु ने विजय के समय भूमि में प्रवेश करते समय कहा था, और वह यह था कि उन्हें इन सभी कनानियों और इन सभी शहरों और उनके निवासियों को नष्ट करना था; और यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो वे अपने बुतपरस्त धार्मिक प्रथाओं से भटक जायेंगे।

गेजेर के साथ दिलचस्प बात यह है कि इसे जीत लिया गया, और आग लगा दी गई, और इसके सभी निवासियों को मार डाला गया, लेकिन यह इस्राएलियों द्वारा नहीं किया गया था ; यह मिस्र के फिरौन द्वारा किया गया था जिसे हमने पद 16 में पढ़ा था। इसलिए गेजेर के खिलाफ कार्रवाई का कनानियों पर इस "प्रतिबंध" का उपयोग करने के लिए प्रभु के आदेश को पूरा करने से कोई लेना-देना नहीं था, जैसा कि कभी-कभी कहा जाता है। यह बस एक मिस्र के फिरौन द्वारा किया गया एक सैन्य अभियान था, जो कि एक सामान्य बात थी क्योंकि जब ये फिरौन ऐसा करने का निर्णय लेते थे तो कनान की धरती पर ऊपर-नीचे मार्च करते थे। निस्संदेह, फिरौन को उस नगर से जो लूट मिली, वह अपने साथ मिस्र ले गया। खंडहरों को पीछे छोड़ दिया गया था और वह खंडहरों को अपनी बेटी को दहेज के रूप में देता है, जब वह सुलैमान से शादी करती है। और इसलिए सुलैमान ने, जैसा कि हम इस पद में पढ़ते हैं, शहर का पुनर्निर्माण करने और उसे मजबूत करने का काम शुरू किया।

शेबा की रानी और भगवान शीबा की रानी इससे आकर्षित लगती है क्योंकि उसने सुलैमान से मुलाकात की थी; उसने जो देखा और सुना उससे वह अभिभूत हो गई। तो आप पद 9 में उसका कथन पढ़ें: वह कहती है, “तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो, जिसने तुम से प्रसन्न होकर तुम्हें इस्राएल के सिंहासन पर बैठाया है। इस्राएल के प्रति यहोवा के अनन्त प्रेम के कारण, उसने तुम्हें न्याय और धार्मिकता बनाए रखने के लिए राजा बनाया है।” यह एक अच्छा कथन है; ऐसा लगता है जैसे उसे राजसत्ता के उद्देश्य के बारे में अच्छी जानकारी है: “उसने तुम्हें न्याय और धार्मिकता बनाए रखने के लिए राजा बनाया है।”

तब तुमने पढ़ा कि उसने राजा को एक सौ बीस किव्कार सोना, बड़ी मात्रा में मसाले और बहुमूल्य पत्थर दिए। राजकीय दौरों पर अक्सर ऐसा होता है; उपहारों का आदान-प्रदान होता है और यह परंपरा आज भी जारी है। लेकिन इसी सिलसिले में आपको सुलैमान की संपत्ति के बारे में कुछ टिप्पणियाँ मिलेंगी। आप आयत 13 में पढ़ते हैं, “सुलैमान ने शीबा की रानी को वह सब दिया जो वह चाहती थी और उसने जो कुछ उसने उसे अपने शाही इनाम में से दिया था, उसके अलावा उसने माँगा। फिर वह चली गई और अपने अनुचर के साथ अपने देश लौट आई।” और फिर तुम पढ़ते हो, “सुलैमान को प्रति वर्ष जो सोना मिलता था उसका तौल छः सौ छियासठ किव्कार था।” अब *एनआईवी स्टडी बाइबल* में एक टेक्स्ट नोट है जो कहता है कि यह लगभग पच्चीस टन है, जिसमें व्यापारियों और व्यापारियों और देश के सभी अरब राजाओं और राज्यपालों से प्राप्त राजस्व शामिल नहीं है। आप इस सोने का क्या करते हैं? राजा सुलैमान ने सोने की ढलाई हुई दो सौ बड़ी ढालें बनवाई; प्रत्येक ढाल में छः सौ बेका सोना लगा। एक बेका लगभग साढ़े सात पाउंड का होता है। राजा ने उन्हें लबानोन के जंगल के महल में रखवाया।

तब राजा ने हाथीदांत से जड़ा हुआ, और उत्तम सोने से मढ़ा हुआ एक बड़ा सिंहासन बनवाया। सिंहासन में छह सीढ़ियाँ थीं, इसकी पीठ पर सीटों के दोनों किनारों पर एक गोलाकार शीर्ष था। मैं उस सिंहासन पर वापस आऊंगा, लेकिन यदि आप थोड़ा और नीचे जाएं, पद 21 पर: “राजा सुलैमान के सभी प्याले सोने के थे; लबानोन के जंगल के महल में घर का सारा सामान शुद्ध सोने का था। चाँदी से कुछ भी नहीं बनता था क्योंकि सुलैमान के समय में चाँदी का मूल्य बहुत कम माना जाता था।”

अब, आप शीबा की रानी की इस यात्रा के संदर्भ में देखें, आपके पास सुलैमान की संपत्ति के बारे में ये बयान हैं, और मुझे लगता है कि उन बयानों में आप शायद कुछ महत्वपूर्ण मोड़ देख सकते हैं। मैं सोचता हूँ कि सुलैमान की संपत्ति को आम तौर पर भगवान के आशीर्वाद के प्रमाण के रूप में देखा जाता है; यह ऐसा कुछ नहीं है जो *अपने आप* में गलत हो। इसकी आलोचना नहीं की गई है, लेकिन मुझे लगता है कि सवाल यह आता है कि कोई व्यक्ति धन के साथ क्या करता है। तुम इसे कैसे उपयोग करते हो? क्या आप इन्हें सरल तरीके से उपयोग करते हैं? भगवान का सम्मान करने के लिए? अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए? या क्या आप इसे अपने लिए उपयोग करते हैं?

सुलैमान और व्यवस्थाविवरण 17 और स्वर्ण संचय यदि आप व्यवस्थाविवरण 17 में राजा के कानून पर वापस जाते हैं, तो तीन चीजें हैं जो इस्राएल के राजा को नहीं करनी थीं: उसे नहीं करना था: उसे बड़ी संख्या में घोड़े हासिल नहीं करने थे : हम पहले ही देख चुके हैं कि सुलैमान ने ऐसा किया था। दूसरा, उसे कई पत्नियाँ नहीं रखनी थीं, लेकिन सुलैमान ने ऐसा किया। तीसरी बात, उसे बड़ी मात्रा में चाँदी और सोना जमा नहीं करना था। अब मैं पहली दो चीजों पर वापस आना चाहता हूँ क्योंकि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं उनका उल्लेख किया जाता है। लेकिन यहां तीसरी बात यह है: उसे बड़ी मात्रा में चाँदी और सोना जमा नहीं करना था। जब आप श्लोक 14 से 25 पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट है कि सुलैमान बिल्कुल वही कर रहा है जो व्यवस्थाविवरण में राजा के कानून में कहा गया है कि उसे नहीं करना चाहिए।

और मुझे लगता है कि जब आप देखेंगे कि वह चाँदी और सोने के साथ क्या कर रहा था तो आप कह सकते हैं कि वह वास्तव में अपनी संपत्ति के साथ कोई समझदारी भरा काम नहीं कर रहा है। वह अपने महल में लटकाने के लिए सोने की दो सौ बड़ी और तीन सौ छोटी ढालें बनाता है, इसकी सजावट शुद्ध सोने से की जाती है। उसके सब प्याले सोने के थे ; उसके घर का सारा सामान सोने का था; चाँदी का कुछ भी नहीं क्योंकि वह पर्याप्त अच्छी नहीं थी। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि ये शायद निर्णय संबंधी मामले हैं। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि एक राजा के लिए विशेष अवसरों के लिए सोने के प्यालों का एक सेट रखना उचित हो सकता है, कुछ इस तरह। लेकिन सामान्य घरेलू वस्तुओं के लिए, जिसके बारे में यहां बात की गई है, ऐसा प्रतीत होता है

कि यह सब ठोस सोना है। ऐसा लगता है कि धन का उपयोग छवि बनाने, प्रभाव जमाने, दरबार की पूरी भव्यता के साथ प्राचीन दुनिया के अन्य राजाओं जैसा बनने के लिए किया जा रहा है।

तो आपके पास उसके सिंहासन का वर्णन है जिसके बारे में मैंने कहा था कि मैं वापस आना चाहता हूँ। "उसने इस महान सिंहासन को हाथीदांत से मढ़वाया, और उत्तम सोने से मढ़वाया। सिंहासन में छह सीढ़ियाँ थीं। इसकी पीठ पर एक गोल शीर्ष था, सीट के दोनों ओर आर्मरेस्ट थे और उनमें से प्रत्येक के पास एक शेर खड़ा था। छह सीढ़ियों पर बारह शेर खड़े थे, प्रत्येक सीढ़ी के दोनों छोर पर एक। किसी अन्य राज्य के लिए ऐसा कुछ भी नहीं बनाया गया है।" यह बिल्कुल सिंहासन रहा होगा। इसे छह सीढ़ियाँ ऊँचा किया गया था। इसलिए वह अपनी प्रजा से ऊपर बैठता है, लेकिन व्यवस्थाविवरण में राजा का कानून कहता है कि राजा को खुद को अपने भाइयों से बेहतर नहीं समझना चाहिए। तो फिर आपको आश्चर्य होगा कि क्या यहां सुलैमान के रवैये ने व्यवस्थाविवरण 17 की उस आवश्यकता का उल्लंघन नहीं किया है, यह देखते हुए कि सिंहासन से पता चलता है कि वह खुद को अपने लोगों से ऊपर मानता है।

श्लोक 19 में उस वाक्यांश के साथ एक दिलचस्प बनावटी संस्करण है: "सिंहासन में छह सीढ़ियाँ थीं, इसके पिछले हिस्से में एक गोल शीर्ष था।" जहां यह कहा गया है, "इसकी पीठ पर एक गोल शीर्ष था," सेप्टुआजेंट, जो कि पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद है, कहता है, "सिंहासन की पीठ पर एक बछड़े का सिर था।" अब, यह स्पष्ट नहीं है कि यह एक पसंदीदा पठन है। कभी-कभी यह जानना कठिन हो जाता है कि जब आपके पास सेप्टुआजेंट और हिब्रू पाठ के बीच अंतर हो तो किसमें मूल, पसंदीदा पाठ शामिल है। लेकिन कम से कम यह संभव है कि इस सिंहासन के निर्माण में मूर्तिपूजा की ओर झुकाव का संकेत हो। आप जानते हैं कि जब आप अध्याय 11 पर पहुँचते हैं, तो अगला अध्याय, श्लोक 5 जहाँ आप पढ़ते हैं कि "उसने सीदोनियों की देवी अशतोरेत और अम्मोनियों के घृणित देवता मोलेक का अनुसरण किया।" तो आप जानते हैं कि अपने शासनकाल में किसी समय सुलैमान ने बुतपरस्त देवताओं की पूजा के विचार मन में लाने शुरू कर दिए थे। यदि उसके सिंहासन पर एक बछड़े का सिर था, तो यह भी मूर्तिपूजा का एक प्रकार का प्रतीक हो सकता है जिसे सीधे उसके सिंहासन में शामिल किया गया था। यह स्पष्ट नहीं है क्योंकि यह सेप्टुआजेंट रीडिंग पर आधारित है, मैसोरेटिक पाठ के हिब्रू रीडिंग पर नहीं।

लेकिन किसी भी मामले में, मुझे लगता है कि जब आप इस अध्याय को पढ़ते हैं और धन की यह तस्वीर प्राप्त करते हैं और इसकी तुलना व्यवस्थाविवरण 17 के बयानों से करते हैं, जो इसराइल के राजाओं के आचरण को नियंत्रित करने के लिए थे, तो मुझे लगता है कि यह फिर से स्पष्ट है कि सुलैमान है सच्चा वाचा राजा नहीं। जब आप वाचा के राजा के उस आदर्श की तलाश करते हैं, तो आप उसे सुलैमान में नहीं पाते हैं; आपको भविष्य के लिए कहीं और देखना होगा।

मैं सोचता हूँ कि अंततः आपको मसीह की ओर देखना होगा। और निश्चित रूप से, पवित्रशास्त्र प्रकाशितवाक्य 22:1 में एक सिंहासन के बारे में बात करता है जहां आप पढ़ते हैं: "स्वर्गदूत ने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से बीच में बहती हुई क्रिस्टल की तरह स्पष्ट थी।" शहर की महान सड़क का। नदी के दोनों ओर जीवन का वृक्ष खड़ा था।" सुलैमान का सिंहासन सच्चे राजा, शांति के सच्चे राजा का सिंहासन नहीं था। वह उससे कम रह गया, लेकिन फिर हमारी अपेक्षा को स्वयं मसीह में उस आदर्श की पूर्ति के लिए आगे बढ़ना होगा।

खामियों के साथ सुलैमान का शांति का साम्राज्य [सिंक्रेटिज्म] मुझे लगता है कि सुलैमान के राज्य की समग्र तस्वीर शांति का राज्य है क्योंकि हर कोई अपनी बेल और अंजीर के पेड़ के नीचे बैठ सकता है, जैसा कि कहा गया है। कोई युद्ध नहीं थे और समृद्धि थी और, कम से कम सुलैमान के शासनकाल की शुरुआत में, सुलैमान स्वयं प्रभु का अनुसरण करता था, और इसलिए यह महान आशीर्वाद का समय था। लेकिन चीजें बदलने और बिगड़ने लगीं। सुलैमान एक ही बार में भारी धन-सम्पत्ति के साथ सिंहासन पर नहीं बैठा। उसने इसे एक क्रमिक प्रक्रिया में जमा किया, और फिर उसने इन सभी पत्नियों को जमा किया, फिर से एक क्रमिक प्रक्रिया में। फिर अंततः उसकी पत्नियों ने उसका हृदय प्रभु से विमुख करके अन्यजाति की आराधना की ओर मोड़ दिया। इसलिए अपने शासन के अंत तक, प्रभु ने एक भविष्यवक्ता को यह कहने के लिए भेजा: मैं तुमसे राज्य लेने जा रहा हूँ और तुम्हारे पास केवल एक जनजाति बचेगी। मुझे लगता है कि आप इसमें जो देख रहे हैं वह यह है कि सुलैमान डेविड का प्रारंभिक पुत्र है, और उसके शांति के राज्य की एक तस्वीर है लेकिन यह अपूर्ण और त्रुटिपूर्ण है। इससे हमें एहसास होता है कि अंततः हमें पूर्ण, शांतिपूर्ण राज्य की पूर्ण

प्राप्ति के लिए कहीं और देखना होगा।

आप सुलैमान में जो पाते हैं वह भगवान की पूजा को इन बुतपरस्त देवताओं की पूजा के साथ जोड़ने की कोशिश कर रहा है, और यह कुछ ऐसा है जो इज़राइल में राजा के बाद राजा के रूप में अस्तित्व में रहा। यह सब सुलैमान के पतन के लिए जिम्मेदार नहीं है। लेकिन सुलैमान ने जिस तरह की चीज़ें कीं, वे बाद में कई अन्य लोगों द्वारा भी की गईं। समन्वयवाद नामक यह चीज़ माउंट सिनाई के स्वर्ण बछड़े से ही उत्पन्न हुई है। वे सुनहरे बछड़े के माध्यम से भगवान की पूजा करने की कोशिश कर रहे थे, इसलिए उस समय समन्वयवाद था। इज़राइल के पूरे इतिहास में यही मूलभूत समस्या रही है।

चलिए दस मिनट का ब्रेक लेते हैं.

डेविड फॉग द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया